गॉधीजी के दार्शनिक विचार

डॉ. रमा एस. चौहान
वाणिज्य विभाग
भवभूति महाविद्यालय, आमगांव
जि.गोंदिया (महाराष्ट्र)
पिन कोड — ४४१९०२
मो.नं. — ९४०३६१६९२९
ई—मेल — drramachauhan@gmail.com

गॉधी दर्शन इस नई सदी में उतना ही महत्वपूर्ण हैं, जितना पिछली शताब्दी में था । आज तकनीकी और विज्ञान की तेज गति के विश्व में गॉधी दर्शन उस पेड़ की भांति है, जो अपने आस—पास अपनी छॉव में हरियाली और शांति का अनुपम परिदृश्य दिखाता है । गॉधीजी का मानना था कि जब तक इस देश के अंतिम व्यक्ति को रोजी और रोटी नही दें सकेंगे उतनी देर तक आजादी के कोई अर्थ नहीं हो सकते हैं । गॉधीजी का दर्शन असल में पिछली सदी की एक विश्वक्रांति हैं । आज भी भारत में कई ऐसे लोग है जो गॉधी दर्शन और इसकी सामाजिक घटनाओं से भले ही सहमत न हो, परंतु यह सच है कि गॉधी दर्शन आज विश्व दर्शन में शांति की एक ऐसी धरोहर है जो शताब्दियों तक मानव समाज को एक नया रास्ता और दृष्टिकोण दिखाती रहेगी । गॉधी दर्शन प्रगति, विकास और शांति का एक मंथन है, अहिंसा का रोशन चिराग है और इस दर्शन में आज भी वो तेज है जो एक नई दुनिया को दिखाता है, जिसमें आपसी भाईचारा है, आपसी सौहार्द है ।

गॉधी दर्शन आज समूचे विश्व को एक नया रास्ता दिखा रहा है । अहिंसा का रास्ता ही आज आतंकवाद और परमाणु विनाश के कगार पर खड़े विश्व को बचा सकता है । गॉधी दर्शन आज समय की आवश्यकता है । गॉधी दर्शन आज शांति के मार्ग की अंतिम कड़ी है । अभी भी हम चूक गये तो शायद विनाश के आलावा बाकी कुछ नहीं रहेगा ।

आज गॉधी दर्शन इस सदी की एक जीवन—पद्धति है । आज जब विश्व एक नये ध्रुवीकरण की ओर अग्रसर है तो गॉधी दर्शन इस नई सदी में और भी समसामायिक और प्रासंगिक हो गया है । आज विश्व के सभी भागों से अहिंसा का जो मार्ग हमें दिखाई देता है उसके पीछे मुख्यत: गॉधी दर्शन की अवधारणा है । डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था कि हमारे देश का यह पुनरूत्थान उस संघर्ष के बिना हुआ है जो अपने पीछे घृणा, कटुता और नैतिकता के ऱ्हास के कई धब्बे छोड़ जाता है । हम इसके लिए महात्मा गॉधी के शुक्रगुजार है जिन्होंने इस देश को एक नया रास्ता

दिखाया है । गॉधीजी का जीवन आजादी को समर्पित था । उनके कर्तव्य में असीम निष्ठा थी । वे आने वाली कई भावी पीढ़ि को एक नई दिशा का दिशा—बोध प्रदान करते रहें ।

महात्मा गॉधीजी ने कहा था कि आर्थिक समानता अहिंसक स्वातंत्र्य की कुंजी है । आर्थिक समानता के लिए काम करने का अर्थ पूंजी और श्रम के बीच शाश्वत संघर्ष को समाप्त करना है । इसका अर्थ यह होता है कि एक तरफ राष्ट्र की संपत्ति का काफी बड़ा हिस्सा जिन गिने—चुने धनी लोगों के हाथ में केंद्रित है उसे कम करना तथा दूसरी ओर गरीब, भूखे लाखों लोगों को ऊपर उठाना था । महात्मा गॉधी का यह सपना उनके उस विचार की ऐसी कट्टर सच्चाई को प्रतिबिंबित करता है जहॉ पर वह भारत के आम आदमी की उम्मीदों का हल सामाजिक परिवर्तन द्वारा निहित देखते हैं । यह उनके ऐसे सामाजिक आधार की एक उस आधारशिला की झॉकी भी प्रस्तुत करता है जिसके परिप्रेक्ष्य में उनका चिन्तन आम आदमी के साथ खड़ा है ।

महात्मा गॉधी ने अपने दर्शन की खुद ही परिभाषा की है । समय—समय पर उनके दर्शन की दृष्टि इस तरह से उनकी एक नई पहचान दिखाती है । गॉधीजी कहते है कि —

जो मानव अपने मानव बन्धुओं से प्रेम करता है, उनकी सेवा करता है, उनके हृदय में ईश्वर स्वयं अपना निवास स्थान बनाना चाहता है । अबू—बेन—आदम ऐसा ही मानव था । उसने अपने मानव बन्धुओं की सेवा की और इसीलिए उसका नाम खुदा के प्यारे बन्दों की सूची में सबसे ऊपर था ।

समकालिन जरूरते यह नहीं है कि एक धर्म हो, बल्कि यह है कि विभिन्न धर्मो को मानने वालों के बीच आपस में आदर और सहनशीलता हो । हम बेजान समानता नहीं चाहते पर विविधता में एकता चाहते है । परम्पराओं, संस्कारों, जलवायु और दूसरी परिस्थितियों को मिटाने का प्रयत्न किया जायेगा तो वह असफल ही नहीं होगा बल्कि अधर्म भी होगा । धर्मो की आत्मा एक हैं, परंतु अनेकों रूपों से प्रकट हुई है । ये रूप अनन्त काल तक रहेंगे । मानवतावादी इस बाहरी आवरण की परवाह न करके विभिन्न आवरणों के भीतर रहने वाली एक ही आत्मा के दर्शन करेंगे ।

गॉधीजी का नाम राष्ट्रीय समाज सुधारकों के इतिहास में अमर रहेगा । वे एक महान् राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा क्रांतिकारी थे । गॉधीजी के विचार मशीनीकरण के सख्त विरूद्ध थे । उनके विचार में मशीन सारे आर्थिक बुराईयों की जड़ है । यह विचार आज के सन्दर्भ में असंगत दिखते है । परंतु गॉधीजी के महान् विचारों में बड़े पैमाने पर रोजगारो का सृजन होता है । इसका लाभ यह है कि इसके द्वारा ग्रामीण श्रमिकों का शहरों के तरफ पलायन रूक सकता है ।

हमारी नीति हर खेत को पानी तथा हर हाथ को काम पर आधारीत होना चाहिए । तभी आर्थिक प्रगति गॉव—गॉव तक पहुॅच सकेगी । लोगों की क्रय शक्ति भी बढ़ेगी ।

वैश्विक आर्थिक प्रतियोगिता में टिके रहने के लिए भी यह आवश्यक है कि हम समग्र रूप से मजबूत हो । भारत की लगभग ७० प्रतिशत जनता आज भी गॉवों में रहती है । और उसे बिना मजबूत बनाये राष्ट्र मजबूत नहीं बन सकता । अत: हमें अपनी आर्थिक नीतियों को ग्रान्मोन्मुख बनाना होगा तथा उसके केंद्रबिंदु में मानवीय पक्ष को रखना होगा ।

महात्मा गॉधी भारतीय दार्शनिक परम्परा की अनमोल देन है । सत्यता, विनम्रता, अहिंसा, स्थिरता एवं पवित्रता गॉधी दर्शन की आधारशिला है । इस आधारशिला की प्राप्ति उन्हें भारत के तीन समृद्ध परम्परा यथा— वैदिक, बौद्ध और जैन परम्परा से हुई थी । वैदिक परम्परा प्रारंभ से ही अहिंसा की शिक्षा देती है । बुद्ध ने सदैव क्रोध को प्रेम से और अशुभ को शुभ से जितने की शिक्षा दी है । जैन दर्शन में अपरिग्रह एवं अहिंसा का विचार सर्वोत्कृष्ट रूप में मिलता है । भारत के इस सामाजिक सास्कृतिक संस्कृति के पुरोधा महात्मा गॉधी ने गीता के निष्काम कर्मयोग को अपने जीवन में अनुप्रणित किया था । उनके जीवन में सत्य, अहिंसा, नम्रता, निडरता गीता के प्रभाव का ही फल रहा है, ऐसा कहना अनुचित न होगा! महात्मा गॉधीजी के जीवन का सारा दर्शन एवं नारी के प्रति दृष्टिकोण गीता के १६ वें अध्याय से प्रभावित रहा है । गॉधीजी के विषय में हम नि:संकोच कह सकते है कि उनका जीवन ही उनका दर्शन रहा है ।

विचारों का मूल्यांकन :—

गॉधीजी एक महान पुरुष थे । तथा उनका व्यक्तित्व बहुत उॅचा था । उनके विचारों का प्रभाव केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा है । अपितु संसार के अनेक देशों में भी उनके विचारों के प्रभाव के चिन्ह देखे जा सकते है । यद्यपि भारत में गॉधीजी के आर्थिक विचारों का सरकार की आर्थिक नीतियों तथा भारतवासियों के चरित्र पर उतना गहरा प्रभाव नही पड़ा है, जितना की पड़ना चाहिए था । परंतु उनके विचारों का प्रभाव सरकार की नीतियों पर काफी पड़ा है । देश में जमींदारी प्रथा का उन्मुलन, घरेलु तथा लघु उद्योगों का विकास, भारी तथा मूल उद्योगों का राष्ट्रीयकरण, कृषि के विकास का महत्व ग्रामीण साख वित की सुविधायें इत्यादि सभी गॉधीजी के विचारों का प्रभाव है ।

गॉधीजी के विचारों से प्रभावित होकर भारत में ''खादी और ग्रामीण औद्योगिक कमीशन'' (केवीआयसी) की स्थापना के संबंध में सन् १९५६ में इसे संसंद में प्रस्तुत

किया गया । तथा अप्रैल १९५७ में इसे संपूर्ण भारत में लागू किया गया । इनके विचारों से प्रभावित होकर ग्रामीण उद्योग की स्थापना की गई है ।

गॉधीजी का नाम राष्ट्रीय समाज सुधारकों के इतिहास में अमर रहेगा । वे एक महान राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा क्रांतिकारी थे । गॉधीजी के विचार मशीनीकरण के सख्त विरुद्ध है । उनके विचार में मशीन सारे आर्थिक बुराइयों की जड़ है । यह विचार आज के संदर्भ में असंगत दिखते हैं । परंतु गॉधीजी के महान विचारों में बड़े पैमाने पर रोजगारी का सृजन होता है । इसका लाभ यह है कि इसके द्वारा ग्रामीण श्रमिकों का शहरों की तरफ पलायन रुक सकता है ।

हमारी नीति हर खेत को पानी तथा हर हाथ को पानी काम पर आधारित होना चाहीए । तभी आर्थिक प्रगति गॉव—गॉव तक पहुॅच सकेगी । लोगों की क्रय शक्ति भी बढ़ेगी ।

वैश्विक आर्थिक प्रतियोगिता में टिके रहने के लिए भी यह आवश्यक है कि हम समग्र रुप में मजबूत हो । भारत की लगभग ७० प्रतिशत जनता आज भी गॉवो में रहती है । उसे बिना मजबूत बनाये राष्ट्र मजबूत नहीं बन सकता । अत: हमे अपनी आर्थिक नीतियों को ग्रामोन्मुख बनना होगा तथा उसके केंद्रबिंदु में मानविय पक्ष को रखना होगा ।

महात्मा गॉधी भारतीय दार्शनिक परम्परा की अनमोल देन है । सत्यता, विनम्रता, अहिंसा स्थिरता एवं पवित्रता गॉधी दर्शन की आधारशिला है । इस आधारशिला की प्राप्ति उन्हे भारत के तीन समृद्ध परम्परा तथा — वैदिक, बौद्ध और जैन परम्परा से हुई थी । वैदिक परम्परा प्रारंभ से ही अहिंसा की शिक्षा देती है । बुद्ध ने सदैव क्रोध को प्रेम से और अशुभ को शुभ से जीतने की शिक्षा दी है । जैन दर्शन में अपरिग्रह एवं अहिंसा का विचार सर्वोत्कृष्ठ रूप में मिलता है । भारत के इस सामाजिक सांस्कृतिक संस्कृति के पूरोधा महात्मा गॉधी ने गीता के निष्काम कर्मयोग को अपने जीवन में अनुप्रणित किया था । उनके जीवन में सत्य, अहिंसा, नम्रता, निडरता गीता के प्रभाव का ही फल रहा है, ऐसा कहना अनुचित न होगा ! महात्मा गॉधीजी के जीवन का सारा दर्शन एवं नारी के प्रति दृष्टिकोण गीता के १६ वे अध्याय से प्रभावित रहा है । गॉधीजी के विषय में हम नि:संकोच कह सकते है कि उनका जीवन ही उनका दर्शन रहा है ।

निष्कर्ष :—

गॉधी के विचारों को आदर्श मानकर आज विश्व में अनेक आंदोलन चल रहे है । पर्यावरणवादी आंदोलन, निशस्त्रीकरण एवं शस्त्र नियंत्रण के लिए आंदोलन, दलित, शोषित, पीढ़ित, पिछड़े एवं नारी मुक्ति के लिए आंदोलन स्वाधिनता एवं समानता के लिए आंदोलन, लिंगभेद एव नस्ल भेद के लिए किया गया आंदोलन,

बाबा रामदेव एवं अण्णा हजारे का भ्रष्टाचार विरोंधी आंदोलन नये विश्व व्यवस्था की और संकेत कर रहे है । दक्षिण आफ्रिका में अश्वेतो की समस्या छुड़ाने के लिए डॉ. नेलसन मंडेला ने गॉधीजी द्वारा बताए हुए मार्ग का अनुकरण किया और अपने राष्ट को वंशावादी नीति से मुक्ति दिलाई । स्वयं अमेरिका में अश्वेतो की समस्याओं को हल करने के लिए मार्टिन ल्युथर किंग ने गॉधीजी द्वारा बताए हुए मार्ग का ही अनुकरण किया ।

मार्क्सवाद समाज के सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करत है क्योंकि, वह इसी वर्ग के उत्थान के लिए प्रयासरत है । उदारवाद बुजुर्वावर्ग का प्रतिनिधित्व करती है एवं इसी वर्ग के उत्थान के लिए प्रयासरत है । जब की गॉधीवाद की वर्गविभेद की विचारधारा न होकर समस्त विश्व के लिए एक मानवतावादी विचारधारा है । गॉधीवाद का उद्देश्य सर्वोदय है । गॉधीवाद की अवधारणा ''वसुधैव कूटुंबकम'' के सिद्धांत में विश्वास करती है । लार्ड बचार्ड आर के अनुसार ''मेरे विचारों में अब वह समय आ गया है जब गॉधी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को विश्वव्यापी स्तर पर व्यवहार में लाया जाना चाहिए । गॉधी के विचारों का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए क्योंकि इसके बिना दूसरा कोई उपाय नही है ।

संदर्भ ग्रथ :—

- उपाध्याय, हरिभाऊ, बापू कथा, सर्व सेवा संघ, प्रकाशन राजघाट, वाराणसी, २००१
- जोशी, श्रीपाद, गॉधीजी एक झलक, नवजीवन, प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९९१
- मिश्र, अनिल, गॉधी के विचार, भारत प्रकाशन, नई दिल्ली, २००९
- रत्तु, कृष्ण कुमार, गॉधी दर्शन, नयी सदी के बदलते संदर्भ, प्रकाशक, बुक एनक्लेव, जयपूर, २००२
- राहुल, राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६
- शर्मा, महेश, राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २००८
- थ्संह, रामजी, गॉधी और भावी विश्व, कॉमनवेल्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, २०००

Research Hub International Journal